आइआइएम रांची के टेडेक्स-2018 में प्रबंधन के गुर पर हुआ मंथन, विशेषज्ञों ने कहा

महिला सशक्तीकरण, जुनून, हसरत, कबाड़ से जुगाड़ व जोखिम लेने की कला से आगे बढ़ेंगे

लाइफ रिपोर्टर @ रांची

भारतीय प्रबंधन संस्थान (आइआइएम) रांची की तरफ से रविवार को टेडेक्स-2018 डीफायर्स ऑफ मर्फी लॉ पर प्रबंधन के गुर और देश के विकास पर चर्चा की गयी. राजधानी के सीएमपीडीआइ स्थित मयूरी प्रेक्षागृह में सुबह से ही देश भर से आये विशेषज्ञों ने एक बेहतर मनुष्य बनने का आह्वान किया. महिला सशक्तीकरण और जज्बा और जुनून, हसरत, जोखिम लेने की कला, कबाड़ से जुगाड़, ग्रामीण युवाओं की ताकत को पहचान कर उनकी क्षमता संवर्द्धन की बातें कही गयीं. संदेश दिया गया कि पारिवारिक गाथा और परंपराओं से ही देश को आगे ले जाया जा सकता है. संस्थान के निदेशक प्रो शैलेंद्र सिंह ने कार्यक्रम की शुरुआत की.

उन्होंने कहा कि टेडेक्स आइआइएम की एक महत्वपूर्ण वार्षिक गतिविधि है, जहां पर एक ही छत के नीचे देश के जानी-मानी हस्तियां अपने संदेशों को युवाओं तक पहुंचाती हैं. आज के कार्यक्रम में मुंबई के डब्बावाला, एयर डीफेंस कॉलेज के प्रमुख मेजर जनरल पीके सहगल, पद्मश्री अशोक भगत, मॉडल प्रियदर्शनी चटर्जी, एडिडास की ब्रांड एंबेसेडर अयेशा बिलिमोरिया, महिला एक्टिविस्ट मानसी प्रधान, मर्सी टेटसिओ और उनकी टीम, एसिड अटैक की पीड़िता रीतू सैनी, ह्यूमर वीडियो निर्माता हर्षदीप आहूजा ने अपने विचार रखे.

सीएमपीडीआइ स्थित मयूरी प्रेक्षागृह में आयोजित टेडेक्स- 2018 में देशभर से जुटे विशेषज्ञों को सुनने के लिए मैनेजमेंट के विद्यार्थियों में उत्साह दिखा.

पद्मश्री अशोक भगत

ग्रामीण युवाओं की ताकत को पहचानें

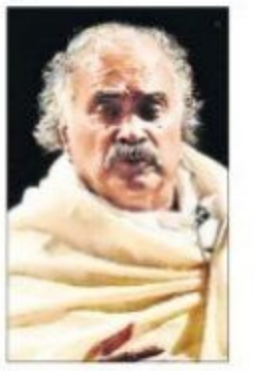

पद्मश्री अशोक भगत ने कहा कि कबाड़ से जुगाड़, ग्रामीण युवाओं को तराशने से ही देश का विकास संभव है. ग्रामीण युवाओं की ताकत को पहचानना जरूरी है. भारत में कुपोषण, गरीबी, अशिक्षा और भूख जैसी चुनौतियां हैं. इससे निबटने के लिए पुरानी परंपरा, पुरानी मान्यताएं और पुराने प्रबंधन की कला जरूरी है. नये युग में परिवार खोता जा रहा है. जब परिवार में एका नहीं रहेगा, तो संस्थान भी नहीं चल पायेंगे. संस्थानों को मजबूत बनाना होगा. लोहा, मिट्टी, कोयला और अन्य सब मिट्टी के नीचे हैं. मिट्टी से प्यार करने की आवश्यकता है. समय उद्वेलित है. फालतू की बहस में युवा जुड़ रहे हैं. आंबेडकर, गांधी और विवेकानंद में कोई फर्क नहीं है. देश के स्थिर होने से ही विकास होगा, उत्पादन बढ़ेगा, प्रबंधन की कुशलता बढ़ेगी.

डिब्बावाला मुंबई की शान हैं : डॉ पवन अग्रवाल

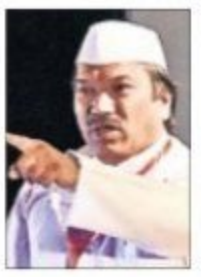

अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर डॉ पवन जी अग्रवाल ने कहा कि डिब्बावाला मुंबई की शान हैं. पांच हजार व्यक्ति प्रति दिन पांच लाख डिब्बा (खाना) मुंबई के सुदूरवर्ती इलाकों में पहुंचा रहे हैं. इस व्यवसाय से जुड़े सभी सदस्य 17 से 18 हजार रुपये प्रति माह आमदनी कर रहे हैं. डिब्बावाला के सदस्यों ने कभी हड़ताल नहीं की. न ही एक गलती आज तक हुई है. 127 वर्षों में किसी भी थाने में एक प्राथमिकी तक दर्ज नहीं हुई है. अपने आप को अन्नदाता के रूप में डिब्बावाला मुंबई की सेवाएं कर रहे हैं. मांसाहारी भोजन नहीं करते. सात्विक और अपने उच्चतम आदर्श और विचारों से लोगों की सेवा करना इनका परम कर्तव्य है. यह एक बेहतर सप्लाई चेन मैनेजमेंट का सटीक उदाहरण है.

खुद पर रखें भरोसा : मेजर जनरल सहगल

मेजर जनरल (सेवानिवृत्त) पीके सहगल का कहना है कि कायर रोज कई बार मरते हैं. पर संघर्ष करनेवाले और चुनौतियों से मुकाबला करनेवाले हर मंजिल को पाने में सफल रहते हैं. उनके अनुसार भारतीय वायु सेना में उन्हें मर्सी मिशन में हमेशा लगाया जाता है. दुरूह और कठिन परिस्थितियों में घायल सैनिकों को बेस तक लाने का उनका सफर जनवरी 1978 में शुरू हुआ था. अपने जीवन में कई घायलों की मदद की. यहां तक की सुनामी में 11 लाख पीड़ितों की मदद की. अपने आप पर भरोसा और कैलकुलेटेड जोखिम लेने की कला से ही मनुष्य बड़ा होता है. इससे जीवन का कोई भी ना होनेवाला काम आसानी से हो जाता है. एक मनुष्य में काफी संभावनाएं होती हैं.

सोशल मीडिया से लोगों तक बातें पहुंचाना सटीक : हर्षदीप आहूजा

सोशल मीडिया इंफ्लूएंसर हर्षदीप आहूजा आज फेसबुक, यू ट्यूब, ट्विटर और अन्य के जरिये मनोरंजक वीडियो के जरिये लोगों को जोड़ रहे हैं. हर्षदीप का वीडियो आइ कांट हीयर यू को सोशल मीडिया पर 61 लाख लोगों ने देखा था. प्राइवेट जॉब वर्सेज गवर्नमेंट जॉब इंटरव्यू का वीडियो सबसे अधिक वायरल हुआ था. पेशे से सॉफ्टवेयर इंजीनियर श्री आहूजा ने अपने जज्बे से लोगों को हंसाने का संकल्प लिया. आज उनके वीडियो को 15 करोड़ से अधिक लोगों ने देखा है. हर्षदीप के अनुसार कई बार उन्हें असफलता मिली है. यहां तक की उनकी गर्लफ्रेंड से भी उनका रिश्ता टूट गया. पर वे विचलित नहीं हुए. उनके अनुसार जॉब (नौकरी) प्रेशर में की जाती है. पर जज्बे से की गयी चीज अपना लक्ष्य होता है. इससे संतुष्टि मिलती है. नाम और शोहरत भी.

भारत में युवतियों के लिए असीमित संभावनाएं : आयशा बिलिमोरिया

एडिडास की राजदूत आयशा बिलिमोरिया आज एक खिलाड़ी, स्पोर्ट्स प्रशिक्षक के साथ-साथ नामी-गिरामी मॉडल हैं. उनका कहना है कि महिलाएं अथवा युवतियां किसी भी मायने में अपने पुरुष सहपाठियों से कम नहीं हैं. महिलाएं वह हर काम कर सकती हैं, जो एक पुरुष कर सकते हैं. उनके अभियान एडिडास रनर्स द फिट गर्ल इसका ही जीता जागता उदाहरण है. वह कहती हैं कि भारत में युवतियों के लिए असीमित संभावनाएं हैं. उन्हें बेहतर अवसर मिलने पर वे अपनी छिपी प्रतिभा से हर मुकाम को हासिल कर सकती हैं. इससे सामाजिक दुर्भावना को भी दूर करने में सफलता मिलती है. समाज की विसंगतियों को भी दूर किया जा सकता है.